SHABDBRAHM E-ISSN: 3049 4230
VOLUME 1, ISSUE 2, OCTOBER 2025

भारत के एकीकरण में सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान

डॉ.सरोज के.सोलंकी

अध्यापक सहायक

हिंदी विभाग

आर्ट्स कॉमर्स एंड सायंस कॉलेज, बोरसद

भारत का स्वतंत्रता प्राप्त करना जितना गौरवपूर्ण था, उतना ही जटिल और चुनौतीपूर्ण था उसका एकीकरण। 15 अगस्त 1947 को भारत आज़ाद हुआ, परंतु वह एक सुसंगठित राष्ट्र के रूप में तत्काल खड़ा नहीं था। ब्रिटिश शासन के अंत के साथ ही देश के सामने सबसे बड़ी समस्या थी–सैकड़ों रियासतों, विविध राजनीतिक हितों, सांप्रदायिक तनावों और प्रशासनिक अव्यवस्थाओं के बीच एक मजबूत, अखंड और संप्रभुता भारत का निर्माण। इस ऐतिहासिक दायित्व को जिस दृढ़ संकल्प, दूरदर्शिता और प्रशासनिक कौशल के साथ निभाया गया, उसके केंद्र में थे–सरदार वल्लभभाई पटेल। सरदार पटेल को 'लौह पुरुष' की संज्ञा यूँ ही नहीं दी गई। उनका व्यक्तित्व कठोर अनुशासन, स्पष्ट निर्णय और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने की भावना से ओत-प्रोत था। भारत के एकीकरण में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। भारत की स्वतंत्रता केवल विदेशी शासन से मुक्ति तक सीमित नहीं थी, बल्कि उससे भी बड़ी चुनौती थी–खंडित, बिखरे और विविधताओं से भरे देश को एक राजनीतिक, प्रशासनिक और भावनात्मक इकाई के रूप में संगठित करना। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र तो हो गया, परंतु उस समय भारत एक राष्ट्र से अधिक एक भौगोलिक अवधारणा मात्र था। लगभग 565 देशी रियासतें, अलग-अलग कानून, सेनाएँ, मुद्राएँ और प्रशासनिक व्यवस्थाएँ–ये सब नवस्वतंत्र भारत के सामने गंभीर संकट के रूप में खड़ी थीं।

सरदार वल्लभभाई पटेल भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री और गृह मंत्री थे । उनके दृढ़ निश्चय, अद्भुत संगठन क्षमता, राजनीतिक दूरदर्शिता और राष्ट्रहित के प्रति अडिग प्रतिबद्धता के कारण ही भारत का एकीकरण संभव हो सका। इसी ऐतिहासिक योगदान के कारण उन्हें

"लौह पुरुष" और "भारत के एकीकरण का शिल्पी" कहा जाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद जिले में हुआ। वे पेशे से वकील थे और प्रारंभ में राजनीति से दूर रहते थे, किंतु महात्मा गांधी के संपर्क में आने के बाद उनका जीवन राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित हो गया। पटेल जी का व्यक्तित्व सादगी, अनुशासन, स्पष्टता और दृढ़ता का प्रतीक था। वे भावुक भाषणों से अधिक ठोस निर्णय और प्रभावी क्रियान्वयन में विश्वास रखते थे। उनका राष्ट्रवाद व्यावहारिक था–वे जानते थे कि स्वतंत्रता तभी सार्थक होगी जब देश एक, अखंड और सशक्त होगा।

स्वतंत्रता आंदोलन की भूमिका सरदार पटेल द्वारा 13 फरवरी 1913 को स्वदेश लौटने के बाद 'उन्होंने अहमदाबाद में अपनी वकालत शुरू की हालांकि उनके बड़े भाई विट्ठलभाई पटेल मुंबई में वकालत करते थे लेकिन फिर भी उन्होंने अपना कार्य क्षेत्र अहमदाबाद चुना। इसके पीछे मुख्य वजह खेड़ा की जनता को उनकी वकालत का लाभ मिले क्योंकि उनका गांव करमसद खेड़ा जिले में स्थित होने तथा खेड़ा सैसनकोर्ट अहमदाबाद में स्थित होना था । सरदार पटेल उच्च कोटि की वकील थे । उनकी वकालत और व्यक्तित्व का सभी सम्मान करते थे।'[१] उन्होंने खेड़ा 1918, बोरसद 1924, और बारडोली 1928 जैसे प्रसिद्ध और सफल सत्याग्रह में किसानों की अगुवाई की। उन्होंने कई स्वतंत्रता आंदोलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। खेड़ा सत्याग्रह की बात करे तो फसल खराब होने के कारण भू-राजस्व भुगतान से छूट प्राप्त करने के लिए पटेल ने खेड़ा सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया। तीन महीने के गहन अभियान, जिसमें गिरफ्तारियां और संपत्ति ज़ब्ती शामिल थी, उसके बाद अंततः औपनिवेशिक सरकार ने राहत प्रदान की। असहयोग आंदोलन (1920) में पटेल ने पूरी तरह से असहयोग आंदोलन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताते हुए वकालत का पेशा छोड़कर राजनीतिक कार्यों में भाग लिया। उन्होंने गांवों का दौरा किया, ब्रिटिश सामानों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन आयोजित किए और विदेशी उत्पादों के बहिष्कार को बढ़ावा दिया। बारडोली सत्याग्रह (1928) में पटेल ने भू-राजस्व में अनुचित वृद्धि के विरोध में इस अभियान का नेतृत्व किया। इस

संघर्ष में पुलिस की बर्बरता और संपत्ति ज़ब्ती जैसी घटनाएं हुईं, लेकिन पटेल के नेतृत्व ने अंततः एक सफल परिणाम दिया, जिसके कारण उन्हें " सरदार " की उपाधि प्राप्त हुई ।

महात्मा गांधी जी द्वारा 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद उनके द्वारा किसानों की समस्या को लेकर किया गया चंपारण सत्याग्रह 1917 से प्रभावित होकर सरदार वल्लभभाई पटेल ने भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में प्रवेश किया और खेड़ा सत्याग्रह में गांधीजी का पूर्ण साथ निभाया। खेड़ा सत्याग्रह के समापन का समारोह 29 जून 1918 को मनाया गया। इस अवसर पर विशाल जुलूस निकाला गया जो बाद में जनसभा में परिवर्तित हो गया। सभा में गांधीजी का सम्मान करते हुए उन्हें एक प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। उत्तर में गांधी जी ने संघर्ष की सफलता का श्रेय सरदार पटेल को देते हुए उनकी बहुत प्रशंसा की। जिस तरह आरंभ में वल्लभभाई की राय गांधीजी के लिए बहुत अच्छी नहीं थी इसे स्वीकारते हुए गांधी जी ने कहा 'मैं मानता हूँ कि जब पहले-पहल मेरी मुलाकात वल्लभभाई से हुई तो मैंने सोचा की अक्खड़ स्वभाव वाला यह व्यक्ति कौन होगा और क्या करेगा...! अगर वल्लभभाई मुझे न मिले होते तो मैं जो काम कर पाया हूं शायद ही कर पाता। इनका मुझे अच्छा अनुभव हुआ है।'[२] महात्मा गांधी जब जेल में थे तब 1923 में राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान को बनाए रखने के लिए उन्होंने नागपुर में झंडा सत्याग्रह का नेतृत्व किया। स्वतंत्रता के समय भारत की स्थिति की बात करे तो 1947 में भारत की स्थिति अत्यंत जटिल थी–देश का विभाजन हो चुका था । सांप्रदायिक हिंसा फैली हुई थी, लाखों शरणार्थियों का पुनर्वास करना था ,आर्थिक संसाधन सीमित थे और सबसे बड़ी समस्या–देशी रियासतों का भविष्य था। ब्रिटिश शासन के अंत के साथ ही देशी रियासतों को यह विकल्प दिया गया था कि वे भारत में विलय करें, पाकिस्तान में जाएँ या स्वतंत्र रहें। यदि रियासतें स्वतंत्र हो जातीं, तो भारत अनेक छोटे-छोटे देशों में बँट जाता, जिससे राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा दोनों खतरे में पड़ जातीं। सरदार पटेल को भारत का पहला गृह मंत्री बनाया गया। यह पद उस समय देश की आंतरिक सुरक्षा, प्रशासन और एकीकरण के लिए सबसे महत्वपूर्ण था। पटेल जी ने इस दायित्व को केवल एक पद नहीं,

बल्कि राष्ट्र-निर्माण का मिशन माना। उन्होंने अपने सचिव वी. पी. मेनन के साथ मिलकर एक स्पष्ट नीति बनाई - संवाद और समझौते द्वारा विलय, आवश्यकता पड़ने पर कठोर निर्णय और शक्ति का प्रयोग, देशी रियासतों के विलय की रणनीति। सरदार पटेल ने रियासतों के शासकों से व्यक्तिगत संपर्क किया। उन्होंने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि भारत में विलय से उनकी प्रतिष्ठा, सम्मान और निजी संपत्ति सुरक्षित रहेगी। इसके लिए उन्होंने इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन (विलय-पत्र) की व्यवस्था की, जिसके अंतर्गत रियासतें रक्षा, विदेश नीति और संचार जैसे विषय केंद्र को सौंपती थीं। पटेल जी ने राजाओं से स्पष्ट शब्दों में कहा– "आपकी भलाई भारत के साथ है, अलगाव में नहीं।"उनकी दृढ़ता और ईमानदारी का परिणाम यह हुआ कि अधिकांश रियासतों ने स्वेच्छा से भारत में विलय कर लिया।'[३]

स्वतंत्रता के पश्चात अखंड भारत की रचना करने में सरदार पटेल ने अहम भूमिका निभाई। भारत की स्वतंत्रता के तुरंत बाद 562 से अधिक रियासतों के कई राजा-महाराजा और नवाब यह मानने लगे थे कि वे पूर्व की तरह अपने-अपने रजवाड़ों के स्वतंत्र शासक बन जायेंगे। उनका तर्क था कि स्वतंत्र भारत की सरकार को उन्हें स्वतंत्र समझना चाहिए। यह तो सरदार पटेल की दूरदृष्टि, बुद्धिमत्ता और कूटनीति थी कि जिन्होंने उन राजाओं को आश्वस्त किया और वे अंततः भारत के गणराज्य में सम्मिलित होने के लिए सहमत हो गए ।'[४] इनका क्षेत्रफल भारत का 40 प्रतिशत था सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व संक्रमण काल में ही वीपी मेनन के साथ मिलकर कई देशी राज्यों को भारत में मिलाने के लिए कार्य आरंभ कर दिया था। पटेल और मेनन ने देशी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हें स्वायत्तता देना संभव नहीं होगा। इसके परिणाम स्वरुप तीन को छोड़कर शेष सभी रजवाडों ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। केवल जम्मू एवं कश्मीर जूनागढ़ तथा हैदराबाद रियासतों के राजाओं ने ऐसा करना नहीं स्वीकारा। जूनागढ़ सौराष्ट्र के पास एक छोटी रियासत थी और चारों ओर से भारतीय भूमि से घिरी थी। वह पाकिस्तान के समीप नहीं थी। वहां के नवाब ने 15 अगस्त 1947 को पाकिस्तान में विलय की घोषणा कर दी। राज्यों की सर्वाधिक जनता

हिंदू थी और भारत में विलय चाहती थी। नवाब के विरुद्ध बहुत विरोध हुआ तो भारतीय सेवा जूनागढ़ में प्रवेश कर गई। नवाब भाग कर पाकिस्तान चला गया और 9 नवंबर 1947 को जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। फरवरी 1948 में वहां जनमत संग्रह कराया गया जो भारत में विलय के पक्ष में रहा। हैदराबाद भारत की सबसे बड़ी रियासत थी, जो चारों ओर से भारतीय भूमि से घिरी थी वहां के निजाम ने पाकिस्तान के प्रोत्साहन से स्वतंत्र राज्य का दावा किया और अपनी सेना बढ़ाने लगा। वहां ढेर सारे हथियार आयात कर रहा था । पटेल चिंतित हो उठे और उनके आदेश से अंततः भारतीय सेना 13 सितंबर 1948 को ऑपरेशन पोलो में सैन्य कार्रवाई हैदराबाद में प्रवेश कर गयी। तीन दिनों के बाद निजाम ने आत्मसमर्पण कर दिया और नवंबर 1948 में भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। नेहरू ने कश्मीर को यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह समस्या एक अन्तराष्ट्रीय समस्या है। कश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्रसंघ में ले गए और अलगाववादी ताकतों के कारण कश्मीरी की समस्या दिनोंदिन बढ़ती गयी ।"[५] इस समस्या को हाल ही में 5 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और गृहमंत्री श्री अमित शाह जी के प्रयासों से जम्मू-कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाला अनुच्छेद 370 और अनुच्छेद 35(ए) को समाप्त कर दिया। जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बन गया और सरदार पटेल का अखंड भारत बनाने का सपना साकार हुआ। 31 अक्टूबर 2019 को जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख के रूप में दो केंद्रीयशासित प्रदेश अस्तित्व में आये। अब जम्मू-कश्मीर केंद्र के अधीन रहेगा और भारत के सभी कानून वहां लागू होंगे। सरदार पटेल जी को राष्ट्र की यह सच्ची श्रद्धांजलि है। गृह मंत्री के रूप में वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय नागरिक सेवाओं आई.सी.एस. का भारतीयकरण कर इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवाएं आई.ए.एस. बनाया। अंग्रेजों की सेवा करने वालों में विश्वास भर कर उन्हें राजभक्ति से देशभक्ति की ओर मोड़ा। यदि सरदार पटेल कुछ वर्ष और जीवित रहते तो संभवतः नौकरशाही का पूर्ण कायाकल्प हो जाता। सरदार पटेल को आधुनिक अखिल भारतीय सेवाओं की स्थापना करने हेतु भारतीय सिविल सेवकों के संरक्षक संत के रूप में भी जाना

जाता है।"[६] सरदार पटेल जहां पाकिस्तान की छद्म व चालाकी पूर्ण चालों से सतर्क थे वही देश के विघटन कार्य तत्वों से भी सावधान करते थे। विशेषकर वे भारत में मुस्लिम लीग तथा कम्युनिस्टों की विभेदकारी सोच के प्रति सजग थे। अनेक विद्वानों का कथन है कि सरदार पटेल बिस्मार्क की तरह थे लेकिन लंदन के टाइम्स ने लिखा था 'बिस्मार्क की सफलताएं पटेल के सामने महत्वहीन रह जाती है'। यदि पटेल के कहने पर चलते तो कश्मीर, चीन, तिब्बत व नेपाल के हालात आज जैसे न होते। पटेल सही मायनों में मनु के शासन की कल्पना थे। उनमें को कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज शिवाजी की दूरदर्शिता थी। वे केवल सरदार ही नहीं बल्कि भारतीयों के हृदय के सरदार थे।

रियासतों के विलय के बाद सबसे बड़ी चुनौती थी–एकीकृत प्रशासनिक ढाँचा। पटेल जी ने भारतीय प्रशासनिक सेवा को मजबूत किया था । उन्होंने कहा–"ये सेवाएँ भारत की एकता की इस्पाती रीढ़ हैं।"उन्होंने अखिल भारतीय सेवाओं को राजनीतिक दबाव से दूर रखते हुए राष्ट्रसेवा का माध्यम बनाया। सरदार पटेल केवल भौगोलिक एकीकरण तक सीमित नहीं थे। वे जानते थे कि सच्ची एकता दिलों को जोड़ने से आती है। उन्होंने भाषाई, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधताओं को भारत की शक्ति माना, कमजोरी नहीं। उनका स्पष्ट मत था कि विविधताओं को सम्मान देते हुए एक मजबूत राष्ट्रीय पहचान का निर्माण किया जाये। महात्मा गांधी सरदार पटेल के राजनीतिक और नैतिक मार्गदर्शक थे। गांधीजी ने पटेल के संगठन कौशल और ईमानदारी पर पूर्ण विश्वास किया। गांधीजी कहा करते थे– "जहाँ कार्य कठिन होता है, वहाँ मैं पटेल को भेजता हूँ।" गांधी और पटेल की जोड़ी ने स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्र भारत–दोनों में निर्णायक भूमिका निभाई। कुछ आलोचक सरदार पटेल को कठोर और तानाशाही प्रवृत्ति का मानते हैं, परंतु इतिहास गवाह है कि उनकी कठोरता व्यक्तिगत नहीं, बल्कि परिस्थितिजन्य और राष्ट्रहित में थी। यदि उन्होंने ढिलाई बरती होती, तो भारत आज एक संगठित राष्ट्र न होता। पटेल ने 560 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करने का नेतृत्व किया। उनकी व्यावहारिक सोच, सूझबूझ और कूटनीति के बल पर अधिकांश रियासतों

का शांतिपूर्ण विलय हुआ, हालांकि हैदराबाद और जूनागढ़ जैसी रियासतों को निर्णायक कार्रवाई के माध्यम से सुलझाया गया। भारत के विभाजन को रोकने के पटेल के प्रयासों ने उन्हें " भारत का लौह पुरुष " कहा गया । सरदार वल्लभभाई पटेल का निधन 15 दिसंबर 1950 को हुआ था। राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान और एकीकृत भारत के उनके दृष्टिकोण के माध्यम से उनकी विरासत आज भी कायम है। 2018 में स्थापित ' स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' उनके प्रयासों और आदर्शों को श्रद्धांजलि है। पटेल को एक ऐसे नेता के रूप में याद किया जाता है जिन्होंने राष्ट्रीय अखंडता और एकता को सर्वोपरि माना। आज जब भारत क्षेत्रीयता, भाषावाद और अलगाववादी प्रवृत्तियों से जूझता है, तब सरदार पटेल का संदेश अत्यंत प्रासंगिक है–मजबूत केंद्र संवेदनशील प्रशासन राष्ट्रीय हित सर्वोपरि । स्टैच्यू ऑफ यूनिटी केवल एक प्रतिमा नहीं, बल्कि उनके योगदान की जीवंत स्मृति है।

सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारत के एकीकरण को केवल राजनीतिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण का यज्ञ माना। उनकी दूरदृष्टि, साहस, संगठन क्षमता और राष्ट्रभक्ति के कारण ही भारत आज एक अखंड, सशक्त और संप्रभु राष्ट्र के रूप में खड़ा है। यदि नेहरू भारत के स्वप्नद्रष्टा थे, तो पटेल उसके निर्माता। यदि गांधी आत्मा थे, तो पटेल उसकी रीढ़। भारत का इतिहास सरदार पटेल के बिना अधूरा है और भारत का भविष्य उनके आदर्शों के बिना असुरक्षित। सरदार पटेल केवल इतिहास नहीं–वे भारत की चेतना हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि:

१. कपूर शुशील : लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल, प्रकाशक विधाविहार, दरियागंज नई दिल्ली ,प्रथम संस्करण २०१३ पृ.सं.९-११

२. कपूर शुशील : लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल, प्रकाशक विधाविहार, दरियागंज नई दिल्ली ,प्रथम संस्करण २०१३ पृ.सं.३०-११

३. દેશી રાજ્યોનું વિલીનીકરણ, લેખક-ડૉ.જયકુમાર આર.શુક્લ, યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ,ગુ.રા.

४. आलेख: 'भारत को एकजुट करनेवाले सरदार पटेल' प्रभा साक्षी पत्रिका, ५ मार्च २०१६

५. नवभारत टाइम्स: 'जम्मू-कश्मीर और लदाख अब दौ अलग-अलग केन्द्रशासित प्रदेश,'नए बदलाव लागु' ३१ अक्टूबर २०१९

६. स्टेच्यु ऑफ़ यूनिटी की वेबसाइट: एचटीटीपीएस ://डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू स्टेच्युऑफ़ यूनिटी

SHABDBRAHM